ISSN 2278-8808
An International Peer Reviewed
SJIF 2013 = 4.194
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

भक्त फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय का प्रगति वि ाय

Randhir (1306075121)

Research Scholar of Singhania University Pacheri Badi , Jhunjhunu , Rajasthan.

Abstract

२४ फरवरी, १८८५ ई०. को सोनीपत जिले के महारा गाँव में पैदा हुए श्री भगत फूल सिंह जी एक दूरदृश्टा व नेक आत्मा थे। आने वाले सम्भाव्य तीव्र विरोध के बावजूद वे औरतों की षिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए कृतसंकल्प थे, विषेशकर ग्रामीण हरियाणा में। भगत फूल सिंह जी का विष्वास था कि औरतों को षिक्षा देकर उन्हें सषक्त व दासता से मुक्त किया जा सकता है। आज भगत फूल सिंह महिला विष्वविद्यालय एक सपना, जिसे भगत फूल सिंह जी ने १९३६ ई०. में खानपुर कलां में कन्या गुरूकुल की स्थापना करते समय देखा था, पुरा हुआ। भगत फूल सिंह जी की हत्या के बाद उनकी कृतसंकल्प बेटी सुभाशिणी जी ने न केवल गुरूकुल का नियन्त्रण अपने हाथ में लिया, बल्कि इसका विभिन्न षाखाओं में विस्तार सजीवता से किया। भगत फूल सिंह महिला विष्वविद्यालय का दृश्टिकोण महिलाओं के जीवन में षिक्षा के माध्यम से एक आमूल-चूल परिवर्तन लाना है तथा उन्हें ज्ञान प्रदान करना, दक्षता प्रदान करना, सषक्त बनाना, चरित्र निर्माण करना, आत्मसम्मान को पहचानना, अपने अधिकारों को पहचानना व कर्त्तव्यों का पालन करना आदि कार्य करने के लिए प्रेरित करना। सभी षैक्षिक और परीक्षा सुधार कार्यक्रम जो कि विष्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा सिफारिष है, जैसे सेमेस्टर प्रणाली, क्रेडिट प्रणाली, सतूत और आन्तरिक मूल्यांकन इस विष्वविद्यालय में षुरू से लागू किये गये हैं

२४ फरवरी, १८८५ ई०. को सोनीपत जिले के महारा गाँव में पैदा हुए श्री भगत फूल सिंह जी एक दूरदृश्टा व नेक आत्मा थे। आने वाले सम्भाव्य तीव्र विरोध के बावजूद वे औरतों की षिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए कृतसंकल्प थे, विषेशकर ग्रामीण हरियाणा में। भगत फूल सिंह जी का विष्वास था कि औरतों को षिक्षा देकर उन्हें सषक्त व दासता से मुक्त किया जा सकता है और इस क्रम में उन्होनें सन् १९३६ में खानपुर कलां में तीन लड़कियों के दाखिले के साथ एक गुरूकुल स्थापित किया। असामाजिक तत्वों ने उनके इस औरतों षिक्षा के अग्रगामी विचार को पसन्द नहीं किया और १४ अगस्त, १९४२ को उनका वध कर दिया।

भगत फूल सिंह की हत्या उनके औरत षिक्षा के विचार को खत्म नहीं कर सकी। उनके इस दर्षन और विरासत को उनकी यषस्वी बेटी पदम श्री सुभाशिणी जी द्वारा आगे बढ़ाया गया। अपने पिता के सत्य के अनुसार सुभाशिणी जी भी स्त्री षिक्षा

के माध्यम से सामाजिक सुधार लाने हेतु कृतसंकल्प थी। भारत सरकार ने उनकी समाज के प्रति सेवाओं को मान्यता दी और उन्हें १६७६ ई. में पदम् श्री सम्मान प्रदान किया। उन्होनें दान व दूसरे साधनों की सहायता से अद्यतन सैदान्तिक षिक्षण संस्थानों की स्थापना ठच्ैडट में की।

BPS – उत्तरी भारत की प्रथम महिला विष्वविद्यालय

आज भगत फूल सिंह महिला विष्वविद्यालय एक सपना, जिसे भगत फूल सिंह जी ने १६३६ ई०. में खानपुर कलां में कन्या गुरूकुल की स्थापना करते समय देखा था, पुरा हुआ। भगत फूल सिंह जी की हत्या के बाद उनकी कृतसंकल्प बेटी सुभाशिणी जी ने न केवल गुरूकुल का नियन्त्रण अपने हाथ में लिया, बल्कि इसका विभिन्न षाखाओं में विस्तार सजीवता से किया। जैसे - ठचै मेमोरियल महिला महाविद्यालय (१६७६), ठण्च्ै कॉलेज ऑफ ऐज्यूकेषन (१६६८), डैड आयुर्वेदिक कॉलेज (१६७३), ठण्च्ै महिला पोलिटेक्निक (१६८४), ज्प्ळ भैंसवाल कलां (१६६६) और च्ैक्‍ महिला कानून महाविद्यालय (२००३) राज्य सरकार ने तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री भुपेन्द्र सिंह हुड्डा के नेतृत्व में कन्या गुरूकुल खानपुर कलां को महिला महाविद्यालय से अपग्रेड़ कर भगत फूल सिंह महिला विष्वविद्यालय के रूप में पूर्ण रूप से १८ अगस्त २००६ को मान्यता प्रदान की। यह उत्तर भारत का प्रथम व एकमात्र महिला विष्वविद्यालय है, जिसकी स्थापना मात्र ३ लड़कियों के दाखिले से हुई थी। आज इस विष्वविद्यालय मे लगभग ७००० लड़कियां विभिन्न संकायों में अध्ययनरत हैं।

दृश्टि – भगत फूल सिंह महिला विष्वविद्यालय का दृश्टिकोण महिलाओं के जीवन में षिक्षा के माध्यम से एक आमूल-चूल परिवर्तन लाना है तथा उन्हें ज्ञान प्रदान करना, दक्षता प्रदान करना, सषक्त बनाना, चरित्र निर्माण करना, आत्मसम्मान को पहचानना, अपने अधिकारों को पहचानना व कर्त्तव्यों का पालन करना आदि कार्य करने के लिए प्रेरित करना।

विषेशतायें –

१. उत्तरी भारत की प्रथम व एकमात्र महिला विष्वविद्यालय जो कि ज्ञण्ळ से चैण्क्ण् स्तर तक की षिक्षा प्रदान करती है।

२. यह विष्वविद्यालय हरे-भरे, प्रदुशण मुक्त ५०० एकड़ के भू-भाग में सुरक्षित कैम्पस में आधुनिकता के साथ परम्परागत रूप में फैला है।

३. विष्वविद्यालय ने सामाजिक, विष्वविद्यालयिक व अनुसंधानिक ;ब्म्प्द्ध केन्द्र स्थापित किया है, जो कि इन्टीग्रेटीड एनर्जी रिसोर्स मैनेजमेन्ट, माइक्रो फायनेन्स प्रैक्टिस और फोम मेडिसिन जैसे प्रेरक कार्यक्रम उपलब्ध करवाती है।

४. भगत फूल सिंह महिला विष्वविद्यालय एक मात्र ऐसा भारतीय विष्वविद्यालय है जिसने इन्डीक ऐषियन षिक्षा के लिए न्ळब् क्षेत्रीय अध्ययन केन्द्र स्थापित किया है।

५. विष्वविद्यालय में विभिन्न वर्गों में विभिन्न कार्यक्रमों की स्थापना की गई है, जो नौकरी प्रदाता व प्रेरक हैं।

६. विष्वविद्यालय में अंग्रेजी षिक्षण हेतु कला भाशा प्रयोगषाला, कर्मचारी प्रषिक्षण और षोध संस्थान की स्थापना की है।

७. विष्वविद्यालय ने कई प्रसिद्ध विदेषी विष्वविद्यालयों के साथ डव्न् दस्तखत किये हैं।

८. विष्वविद्यालय सभी विद्यार्थियों को मुफ्त प्लेसमेन्ट व व्यक्तित्व विकास में सहायता प्रदान करती है।

९. विष्वविद्यालय ने नेतृत्व कौषल के विकास के लिए युवा महिला संसद की स्थापना की है।

१०. विष्वविद्यालय में अच्छे षैक्षिक, खेलकूद तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के लिए अलग-अलग विभागों की स्थापना की है।

षैक्षणिक-

सभी षैक्षिक और परीक्षा सुधार कार्यक्रम जो कि विष्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा सिफारिष है, जैसे सेमेस्टर प्रणाली, क्रेडिट प्रणाली, सतृत और आन्तरिक मूल्यांकन इस विष्वविद्यालय में षुरू से लागू किये गये हैं। विष्वविद्यालय ने सांस्कृतिक षैक्षणिक वातावरण व अनुसंधान के परिवर्धन हेतु कई प्रसिद्ध षैक्षिक अध्येताओं को कई विभागों में, चीण्क के कई वर्गों में तथा नवीन कार्यक्रमों में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया है।

खेलकुद-

विष्वविद्यालय विद्यार्थियों को आंतरिक व बाहरी दोनों प्रकार के खेल की सुविधाऐं प्रदान करता है। प्रथम राश्ट्रीय महिला कुष्ती प्रतियोगिता का आयोजन यहां किया गया, जिसमें ओलम्पिक कांस्य पदक विजेता योगेष्वर दत्त ने पहलवानों को प्रोत्साहित किया।

अतिरिक्त पाठ्येतर गतिविधियां-

सामाजिक जागरूकता, श्रम की महता आदि भावना विद्यार्थियों में भरने हेतु विष्वविद्यालय ने राश्ट्रीय सेवा कार्यक्रम लागू किया है। वालेन्टीयर को राश्ट्रीय सेवा योजना ;छैैद्ध मेरीट प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है जो उन्हें भविश्य में नौकरी प्राप्त करने में मद्द करता है। प्रति वर्श गणतन्त्र दिवस के अवसर पर राश्ट्रीय सेवा योजना ;छैैद्ध के वालेन्टीयर दिल्ली में गणतन्त्र दिवस कार्यक्रम में षिरकत करते है।

प्लेसमेन्ट -

विष्वविद्यालय उत्कृश्ट छात्रों को, जो कि विषेशकर व्यावसायिक पाठ्यक्रम के होते है, नौकरी प्राप्त करने में सहायता करता है। विभिन्न कम्पनियों को प्लेसमेन्ट हेतु विष्वविद्यालय कैम्पस में ही बुलाया जाता है।

अन्तर्राश्ट्रीयकरण-

विष्वविद्यालय ने विद्यार्थियों व प्राध्यापकों को अन्तर्राश्ट्रीय स्तर का ज्ञान आदान-प्रदान के लिए निम्नलिखित विधि के साथ डव्न्ै दस्तखत किये है -

१. ब्रिटिष काउन्सिल, नई दिल्ली के साथ, जो कि कैम्बीज विष्वविद्यालय के उपकेन्द्र के रूप में परीक्षा विभाग है।

२. बाल्टीमोर विष्वविद्यालय **न्ै।** के साथ।

३. सन्त कैथरीन विष्वविद्यालय **न्ै।** के साथ।

४. नारीधंम ट्रेन्ट विष्वविद्यालय **न्ै।** के साथ।

५. क्वागवान विष्वविद्यालय दक्षिणी कोरिया के साथ।

अन्तर्राश्ट्रीय सम्मेलन :- विष्वविद्यालय ने प्रथम अन्तर्राश्ट्रीय सम्मेलन - ‘‘भारत कोरिया के भूतकालिन व वर्तमानकालीन सन्बन्ध‘‘ विशय पर १८-१६ जुलाई २०१२ को आयोजित किया। भारत तथा दक्षिणी कोरिया के विद्यार्थियों ने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, व्यापारिक, वाणिज्यिक, षैक्षिक, और सामाजिक तथा ग्रामीण पुनर्निर्माण के अनुभव जो भारत कोरिया के सम्बन्ध के विशय पर है, का अध्ययन किया।

विष्वविद्यालय ने द्वितीय अंतर्राश्ट्रीय सम्मेलन १८ से २० जनवरी २०१३ तक आयोजित किया, जो दक्षिण-पूर्व-पूर्व लषिया और भारत के ऐतिहासिक आपसी सम्बन्ध कला के क्षेत्र मे, लाओस (थाईलैंण्ड, कम्बोडिया और वियतनाम) संस्कृति पर आधारित था। इन देषों के अतिरिक्त पोलैण्ड, अमेरिका, ब्रिटेन व रूस आदि देषों के षोधार्थियों ने अपने षोध पत्र, भारत के प्राचीन व वर्तमान सम्बन्ध उसके ऐषिया में पड़ोसी देषों के साथ सांस्कृतिक, ऐतिहासिक व्यापारिक, धार्मिक, सामाजिक विकास, विज्ञान व तकनीकी विशय पर प्रस्तुत किये।

विष्वविद्यालय का क्वांगवान विष्वविद्यालय, तियोल दक्षिणी कोरिया और लोक प्रकषासन मंच के साथ सहयोग भी तब देखने को मिला, जब २६ जनवरी, २०१३ को कोरियन लोक प्रषासन समिति द्वारा भगत फूल सिंह महिला विष्वविद्यालय के सहयोग से एक अन्तर्राश्ट्रीय सेमीनार आयोजन किया गया, जिसका विशय था - राश्ट्रीय ग्रामीण और पर्यावरणीय विकास तथा जन कार्य।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

भट्ट, जयश्री सुनील, ‘‘वैदिक काल में नारी षिक्षा’’, राश्ट्रीय षैक्षिक योजना और प्रषासन संस्थान (नीपा), परिप्रेक्षय वर्श ११, अंक-१, नई दिल्ली, २००४।

कौर रजिन्द्र, ‘‘आर्य समाज का महिला शिक्षा में योगदानः एक अध्ययन’’, लघु शोध प्रबन्ध, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरूक्षेत्र, २००४।

आर्य प्रतिनिधि संभा हरियाणा का साप्ताहिक पत्र, ‘‘सर्तहितकारी’’ आचार्य प्रिंटिंग प्रैस, रोहतक, ७ फरवरी २००४।

आर्य प्रतिनिध सभा हरियाणा का साप्ताहिक पत्र, ‘‘आर्य जगत’’, आर्य समाज भवन, नई दिल्ली, १८ से २४ जनवरी २००४।

विवरण पत्रिका, ‘‘कन्या गुरूकुल, बचगांवा (गामड़ी) कुरूक्षेत्र’’, कन्या गुरूकुल प्रबन्ध समिति, २००४।

पत्रिका, वेदवाणी, ‘‘वैदिक महिला विशेषांक’’, वेदवाणी कार्यालय, रेवली (सोनीपत), नवम्बर, २००५।

षर्मा, आर, ए, ‘‘शिक्षा अनुसंधान’’, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ, २००३।

विवरण पत्रिका, ‘‘ग्रोथ ऑफ दा गुरूकुल विद्यापीठ (१६२०-२००५)’’, महासभा गुरूकुल विद्यापीठ, २००५।